श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ३

ऑगस्त - 2022

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. हम द्रव्यस्नान करने के बाद भावस्नान का लक्ष्य चूक गये तो ..... नहीं पा सकते ।
२. ऐसे ..... के समान असत्य को छोडने का तूने कभी भी गंभीर प्रयास नहीं किया है ।
३. श्री अजितनाथ भगवान जो ..... की प्रतीति में निपुण है उन्हें मैं प्रणाम करता हुं ।
४. दो तीन या अधिक अक्षरों का ज्ञान ..... श्रुत कहलाता है ।
५. जो चोरी का धन है वो प्रसिद्ध ऐसी..... का नाश करता है ।
६. कर्म नाम की कोई सत्ता है ही नहीं ..... ऐसी आत्मा को मूर्त कर्म कैसे लग सकते हैं ?
७. मेरे अभिग्रह नियम पच्चखाण क्या है ? ऐसा चिंतन श्रावक ..... में करता है ।
८. विषम संख्या हो वहाँ एक ही ..... से वर्गमूल खोजा जाता है ।
९. स्त्री द्वारा कही गई व्यक्तिगत बात अन्य से कहना ..... अतिचार है ।
१०. भाव की विशुद्धि से आंशिक ..... प्रकटे और कर्मरुपी मैल दूर होकर आत्मा निर्मल बने ।
११. अग्निभूति का अभिमान दूर होते ही वे ..... से झुक गये ।
१२. कांटा तौलने का तराजू की डंडी में ..... रखे ।
१३. क्षमा निर्लोभता और ..... के भंडाररुप शांतिनाथ भगवान को मैं प्रणाम करता हूं ।
१४. श्रावक रात में खांसी खँकारना उँचे आवाज में करे तो पापकारी संसार जागृत होकर अपने आरंभ के काम में प्रवृत्त हो जाय तो उन दोषो का खुद कारण रुप हो जाने से उसे ..... की प्राप्ति होती है ।
१५. उत्कृष्ट से संपूर्ण लोक में स्थित रुपी द्रव्यों को देखकर भी अचानक नष्ट हो जाने वाला ज्ञान ..... अवधिज्ञान है।
१६. यह जीवन भी हमारी ..... को घटाने के बदले बढाने वाला ही साबित होगा ।
१७. पृथ्वीमाता के दूसरे पुत्र का जन्म ..... नक्षत्र में हुआ था ।
१८. दर्शनावरणीय कर्म ..... के समान कहलाता है ।
१९. द्रव्यस्नान में अप्काय के जीवों की विराधना का दोष है, परंतु उससे जो ..... होती है उसके लिये महान लाभदायी है।
२०. अशाश्वत पदार्थ सतत ..... होते हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. घी, दूध वगैरह सात्विक पदार्थो से अमूर्त ऐसे ज्ञान को प्रत्यक्ष क्या होते देखा गया है ?
२. सामान्य से मन के अध्यवसाय को जाने वह कौनसा मनःपर्यवज्ञान कहलाता है ?
३. घोर अतिघोर नरक में ले जाने वाले सात व्यसनों में जिसका समावेश होता है वह क्या है ?
४. कुस्वप्न के दुःस्वप्न के ये दोनों स्वप्न कैसे हैं?
५. जिससे वस्तु या तत्व की सूक्ष्म विचारणा हो सके उसे क्या कहते हैं ?
६. श्रावक किस चोरी की जयणा रखता है ?
७. मूर्त ऐसे शस्त्र से भी किसे खंडित नहीं किया जा सकता ?
८. कैसी वस्तु की चौडाई को उसका व्यास कहा जाता है ?
९. श्रावक के इन व्रतों को उसके अतिचारों को प्रभुजी के द्वारा किस अंग में बताये गये है ?
१०. सब दिशाओं में पवन फैल जाता है, तब कौनसा तत्व समझना ?
११. केवलज्ञान के समान दूसरा कोई ज्ञान नहीं इसलिये उसे क्या कहते हैं ?
१२. अग्निभूति के विचार से किसकी हार संभव नहीं थी ?
१३. किस वार को दातुन नहीं करना चाहिये ?
१४. किसीके साथ विश्वासघात करना यह कौनसा अतिचार है ?
१५. दुःख का निवारण तथा सुख का कारण ढूंढ रहे हो तो हमें किसका शरण पाना चाहिये ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. निव्वुइ २) अज्जव ३) इयर ४) स्थौल्यं ५) वग्ग ६) खंति ७) पडुव्व ८) तिलक्ख ९) जाइ १०) महिअं ११) निधानं
१२. वक्खंभ १३) निचिअं १४) भुविज १५) पाहुड १६) तदुच्यते १७) सुत्तया १८) रिउमइ १९) अजिअस्स २०) पडिवती

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) असत्य	१) तर्जनी	६) पीठिका	६) प्रतिपत्तिश्रुत
२) मार्गणा	२) अतिक्रम	७) असुर	७) उपघात
३) कामदेव	३) क्षेत्रप्रत्ययी	८) क्षेत्रफल	८) सांसारिक लाभ
४) अनुग्रह	४) पुण्योदय	९) अननुगामी	९) प्रतिमा वहन
५) विरुद्धराज्यातिक्रम	५) गणितपद	१०) चेतन	१०) सुवर्णकुमार

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. केवलज्ञान कितने ज्ञान रहित है ?
२. अग्निभूति ने कितनी विद्याओं का अभ्यास किया था ?
३. मृषावाद विरमण व्रत की विशेष शुद्धि के लिये कितने नियम सहायक बन सकते है ?
४. दृष्टिवाद में मुख्य अधिकार कितने हैं ?
५. तीसरे प्रहर में स्वप्न देखा हो तो कितने दिन में फल देता है ?
६. अग्नभूति उम्र के कितनावे वर्ष में सर्वज्ञ बने ?
७. मूल मार्गणा के उत्तरभेद कितने ?
८. अदत्तादान विरमण व्रत के अतिचार कितने ?
९. कर्मो के क्लेश कितनी क्रियाओं के भेद से होते हैं ?
१०. एक एक वस्तु में अलग-अलग कितने अधिकार होते हैं ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. कुलपुत्र कुछ ही दिनों के बाद तीर्थयात्रा कर वापिस आता है ।
२. मानव का भव तो आत्मशुद्धि के लिय ही मिला है ।
३. सम संख्या हो वहाँ एक ही संख्या से वर्गमूल खोजा जाता है ।
४. अमूर्त ऐसे आकाश को मूर्त ऐसे चंदन का विलेपन नहीं हो सकता ।
५. वर्धमान अवधिज्ञान उत्पन्न होता है तब अंगुल के संख्यातवे भाग क्षेत्र को जाने ।
६. श्री अग्निभूति भगवान महावीर की उपस्थिति में ही निर्वाण पाये ।
७. जो मेरे अधिकार या हक का नहीं है उसके उपर मेरी सत्ता जमाऊंगा वो अदत्तादान है ।
८. यदि नींद में दुःस्वप्न देखा हो तो एक सौ आठ श्वासोश्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करना ।
९. केवलज्ञान क्षायोपशमिक भाव का है ।
१०. सारे अयोग्य कार्य असत्य के साथ ही जुडे हुए व बंधे हुए है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. अमूर्त ऐसी आत्मा को मूर्त कर्म कैसे लग सकते हैं?
२. खुद के पाप और दोषो का भान होने पर उन्हें त्यागने का प्रयत्न करता है ।
३. अज्ञान अवस्था में हो चुके पापों की क्षमा मांगी जा सकती है ।
४. तीर्थस्नान जैनो में मान्य नहीं है ।
५. हे शांति मुनि ! भगवान मुझे शांति तथा समाधि का वरदान दो ।
६. विभंगज्ञान मिथ्यात्वी को होता है इससे वह मलीन है ।
७. किसी के साथ व्यापार करते हुए उसका द्रव्य अपने पास भूल से रह गया हो तो वो उसे वापस नहीं दिया हो ।
८. सभी तीर्थों में मेरे साथ स्नान कराया है ।
९. विज्ञान अपने सिद्धान्तो में परिवर्तनशील है ।
१०. श्रुतज्ञान को ढांके अथवा आवरण करे वह श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. केवलज्ञान २) अदत्तादान विरमण व्रत के लिये नियम, जयणा और अतिचार ।
३. धर्मजागरिका में चिन्तन और उसका फल ४) असत्य वचनों से होने वाले नुकसान ।
५. श्री अजीतनाथ व शांतिनाथ प्रभु की गुण गरिमा ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com